RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-02
February-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

[1]राघवेन्द्र सिंह भदौरिया; [2]डॉ. सविता शर्मा

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग आईसेक्ट विश्वविद्यालय, रायसेन (म.प्र.)
[2]शोध निर्देशिका, शिक्षा संकाय आईसेक्ट विश्वविद्यालय, रायसेन (म.प्र.)

ARTICLE DETAILS

Article History

Published Online: 28 February 2018

Keywords

गृह समायोजन,स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायाजन,भावनात्मक समायोजन,विद्यालयी समायोजन, शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थी इत्यादि।

ABSTRACT

प्रस्तुत शोधपत्र में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया। इस शोध कार्य में हमनें माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से 50 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना है। जिसमें 25 शासकीय अशासकीय विद्यालय एवं 25 अशासकीय विद्यालयो के विद्यार्थियों का समूह है। आँकड़ों के संकलन के लिए उपकरण के रूप में समायोजन मापन के लिए स्वनिर्मित समायोजन प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य से हमें यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि अशासकीय विद्यालयो के विद्यार्थियों का गृह समायोजन,सामाजिक समायोजन स्वास्थ्य समायोजनएवं विद्यालयी समायोजन शासकीय विद्यालयो के विद्यार्थियों की अपेक्षा अच्छा होता है। एवं शासकीय विद्यालयो के विद्यार्थियों का भावनात्मक समायोजनअशासकीय विद्यालयो के विद्यार्थियों की अपेक्षा अच्छा होता है। शोधकार्य से यह परिणाम प्राप्त हुए हैं कि शासकीय विद्यालयो के विद्यार्थियों के परिवार, शिक्षक, शासन एवं विद्यालय प्राचार्य को विद्यार्थियों के बेहतर समायोजन के लिए प्रयास करना चाहिए।

प्रस्तावना :–

"शिक्षा एक चाबी है, जो संसार की उज्ज्वलता के प्रति एक व्यक्ति की आँखें खोलती है।" इसलिए जीवन के आदर्शों को प्राप्त करने के लिए शिक्षा एक षक्तिषाली उपकरण है। शिक्षा को षब्दों में बांधना मुश्किल है शिक्षा हमारे यश को चारों तरफ फैलाती है। हमारे मार्ग में आने वाली मुसीबतों को सुलझाती है तथा हमारे जीवन को खुशहाल तथा सफल बनाती है अर्थात् जिस प्रकार सूरज की रोशनी पाकर कमल का फूल खिल उठता है तथा सूर्यास्त होने पर कुम्हला जाता है, ठीक उसी तरह शिक्षा की रोशनी को पाकर व्यक्ति कमल के फूल की भाँति खिल उठता है तथा अशिक्षित रहने पर गरीबी, षोक एवं कष्ट के अंधकार में डूब जाता है। इस प्रकार यह रोशनी देने वाली शिक्षा बच्चे को अपने घर और विद्यालय से प्राप्त होती है। पारिवारिक वातावरण और विद्यालयी वातावरण दोनों ही बच्चे के जीवन को प्रभावित करते हैं, अगर दोनों का वातावरण सकारात्मक है, तो बच्चे में अनेक प्रकार के आदर्श, मूल्य, गुणों तथा संस्कारों का विकास होता है और यदि नकारात्मक है, तो बच्चा अनेक प्रकार के अवगुणों से भर जाता है।

समायोजन :–

बोरिंग, लेगफेल्ड और बेल्ड के अनुसार – ''समायोजन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलन संबंध बनाये रखने के लिये अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।''

पूर्व शोध कार्य :–

स्वरूप डॉ. एम. रतना (2015) ने इण्टरमीडियट स्तर के विद्यार्थियों के घर समायोजन का शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। शोध का मुख्य उद्देश्य था कि इण्टरमीडियट स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव डालने वाले घर के वातावरण का अध्ययन करना। न्यादर्श के लिए वर्गबद्ध तरीके के द्वारा इण्टरमीडियट स्कूलों से 400 विद्यार्थियों (200 लड़के तथा 200 लड़कियाँ) का चुनाव किया गया, जिनमें से 100 लड़के शहरी स्कूलों से तथा 100 लड़के ग्रामीण स्कूलों से तथा 100 लड़कियाँ शहरी स्कूलों से तथा 100 लड़कियाँ ग्रामीण स्कूलों से चुनी गई। इनमें 200 छात्र प्राईवेट तथा 200 छात्र सरकारी विद्यालयों से सम्बन्धित थे। शोधकर्त्ता के द्वारा स्व–निर्मित घर–वातावरणीय प्रश्नावली का प्रयोग किया गय। प्रश्नावली में 53 पदों को डाला गया। 53 पदों को 5 आयामों में बांटा गया तथा शैक्षिक उपलब्धि को जानने के लिए बच्चों के इण्टरमीडियट कक्षा के पहले की कक्षा के अंकों को लिया गया। आकड़ों पर मध्यमान, मानक विचलन, 'टी' परीक्षण तथा कार्ल पीयरसन द्वारा निर्मित प्रोडेक्ट मूवमैन्ट सहसम्बन्ध का प्रयोग किया गया। शोध के निष्कर्ष निकले– घर–वातावरण तथा शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया तथा

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

लड़के और लड़कियों के प्रत्यक्षीकरण में भी सार्थक अन्तर पाया गया।

समस्या कथन :– "शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन का विश्लेषणात्मक अध्ययन"।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन, भावनात्मक समायोजन एवं विद्यालयी समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध प्रविधि :–

अध्ययन की परिकल्पानाएं :–

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के गृह समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
3. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के स्वास्थ्य समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
4. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
5. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के भावनात्मक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
6. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध कार्य में हमनें माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से 50 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना है। जिसमें 25 शासकीय विद्यालय एवं 25 अशासकीय विद्यालयो के विद्यार्थियों का समूह है। आँकड़ों के संकलन के लिए उपकरण के रूप में समायोजन मापनी के लिए स्वनिर्मित समायोजन प्रश्नावली का प्रयोग किया गया तथा आँकड़ों के संकलन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।आँकड़ों के मूल्यांकन के लिए सांख्यिकी प्रविधि के रूप में मध्यमान, मानक विचलन एवं टी टेस्ट का प्रयोग किया गया।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण :–

परिकल्पना क्रमांक :– 1

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी क्रमांक :– 1

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
शासकीय विद्यालय	25	73.76	7.97	5.56	सार्थक अन्तर है
अशासकीय विद्यालय	25	84.84	11.17		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजनका मध्यमान कमशः 73.76 एवं 84.84तथा शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन का मानक विचलन कमशः 7.97 एवं11.17 है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 5.56है जो 0.05 विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.00 से अधिक है। अतः इन दोनों समूहों के मध्यमानों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर होता है। अतः हम कह सकते हैं कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजनमें सार्थक अंतर होता है।

परिकल्पना क्रमांक :– 2

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के गृह समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी क्रमांक :– 2

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
शासकीय विद्यालय	25	14.40	2.02	2.88	सार्थक अन्तर है
अशासकीय विद्यालय	25	16.20	2.27		

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के गृह समायोजन का मध्यमान क्रमशः 14.40 एवं16.20 तथा शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के गृह समायोजन का मानक विचलन क्रमशः 2.02 एवं 2.27 है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 2.88है जो 0.05 विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.00 से अधिक है। अतः इन दोनों समूहों के मध्यमानों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर होता है। अतः हम कह सकते हैं कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के गृह समायोजन में सार्थक अंतर होता है।

परिकल्पना क्रमांक :– 3

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के स्वास्थ्य समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी क्रमांक :– 3.

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
शासकीय विद्यालय	25	13.84	2.59	4.74	सार्थक अन्तर है
अशासकीय विद्यालय	25	17.24	4.03		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के स्वास्थ्य समायोजन का मध्यमान क्रमशः 13.84 एवं 17.24तथा शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के स्वास्थ्य समायोजन का मानक विचलन क्रमशः 2.59एवं 4.03है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 4.74है जो 0.05 विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.00 से अधिक है। अतः इन दोनों समूहों के मध्यमानों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर होता है। अतः हम कह सकते हैं कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के स्वास्थ्य समायोजन में सार्थक अंतर होता है।

परिकल्पना क्रमांक :– 4

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी क्रमांक :– 4.

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
शासकीय विद्यालय	25	16.24	2.72	4.42	सार्थक अन्तर है
अशासकीय विद्यालय	25	18.68	1.70		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का मध्यमान क्रमशः 16.24 एवं 18.68 तथा शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का मानक विचलन क्रमशः 2.72 एवं 1.70 है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 4.42 है जो 0.05 विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.00 से अधिक है। अतः इन दोनों समूहों के मध्यमानों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर होता है। अतः हम कह सकते हैं कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर होता है।

परिकल्पना क्रमांक :– 5

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के भावनात्मक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी क्रमांक :– 5.

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
शासकीय विद्यालय	25	14.56	2.23	.655	सार्थक अन्तर है
अशासकीय विद्यालय	25	14.08	2.79		

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के भावनात्मक समायोजन का मध्यमान क्रमशः 14.56 एवं 14.08 तथा शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के भावनात्मक समायोजन का मानक विचलन क्रमशः 2.23 एवं 2.79 है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान .655 है जो 0.05 विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.00 से अधिक है। अतः इन दोनों समूहों के मध्यमानों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर होता है। अतः हम कह सकते हैं कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के भावनात्मक समायोजन में सार्थक अंतर होता है।

परिकल्पना क्रमांक :– 6

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी क्रमांक :–6.

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
शासकीय विद्यालय	25	14.72	3.90	4.81	सार्थक अन्तर है
अशासकीय विद्यालय	25	18.64	2.51		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन का मध्यमान क्रमशः 14.72 एवं 18.64 तथा शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन का मानक विचलन क्रमशः 3.90 एवं 2.51 है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 4.81 है जो 0.05 विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.00 से अधिक है। अतः इन दोनों समूहों के मध्यमानों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर होता है। अतः हम कह सकते हैं कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन में सार्थक अंतर होता है।

परिणाम :–

शोधकार्य से यह परिणाम प्राप्त हुए हैं कि अशासकीय विद्यालयो के विद्यार्थियों का गृह समायोजन,सामाजिक समायोजन स्वास्थ्य समायोजनएवं विद्यालयी समायोजन शासकीय विद्यालया के विद्यार्थियों की अपेक्षा अच्छा होता है। एवं शासकीय विद्यालयो के विद्यार्थियों का भावनात्मक समायोजनअशासकीय विद्यालयो के विद्यार्थियों की अपेक्षा अच्छा होता है। शोधकार्य से यह परिणाम प्राप्त हुए हैं कि शासकीय विद्यालयो के विद्यार्थियों के परिवार, शिक्षक, शासन एवं विद्यालय प्राचार्य को विद्यार्थियों के बेहतर समायोजन के लिए प्रयास करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

- मंगल एस.के. (2009). "शिक्षा मनोविज्ञान", नई दिल्ली प्रिन्टेस हॉल ऑफ इण्डिया।
- शर्मा आर.ए.(2006). "शैक्षिक अनुसन्धान", मेरठ आर लाल बुक डिपो 528.
- सरीन एवं स्टीन(2005). "शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ", विनोद पुस्तक मंदिर।
- पाठक पी.डी. (2005). "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- स्वरूप डॉ. एम. रतना (2015). इण्टरमीडियट स्तर के विद्यार्थियों के घर समायोजन का शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved